आकीर्णमृषिपत्नीनामुटजद्वाररोधिभिः ।

अपत्यैरिव नीवारभागधेयोचितैर्मृगैः ।।50।।

अन्वय नीवारभागधेयोचितैः उटजद्वाररोधिभिः ऋषिपत्नीनाम् अपत्यैरिव मृगैः आकीर्णम् (आश्रमम् प्रापत्)।

अनुवाद नीवार नामक धान को खाने के अभ्यासी, पर्णकुटियों के द्वारों को रोककर खड़े तथा ऋषिपत्नियों की सन्तान के समान मृगों से भरे हुए आश्रम में पहुंचे।

टिप्पणियां

मृगैः आकीर्णम् हिरणी से भरा हुआ। आकीर्णम् आ उपसर्ग कृ धातु क्त, 'आश्रम' का विशेषण।

उटजः उटजानां (झोपड़ियों के) द्वाराणि (षष्ठी तत्पुरुष) तानि रोद्धु शीलं येषां ते उटजद्वाररोधिनः तैः। 'मृगैः' का विशेषण है, वे मृग जो कुटिया के द्वार पर खड़े हो जाते थे और रास्ते को रोक लेते थे। मृग पालतू थे और इतने अभ्यस्त एवं आश्वस्त थे कि कुटिया के द्वार पर मार्ग रोककर खड़े हो जाते थे।

नीवार नीवाराणां भागः इति नीवारभागः (षष्ठी तत्पुरुष), नीवारभागः एवं नीवारभागधेयः (भागरूपनामभ्योधेय) नीवारभागधेयस्य उचिताः (षष्ठी तत्पुरुष), तैः 'मृगैः' का विशेषण। नीवार नामक जंगली धान के भाग (हिस्से) को खाने के अभ्यासी। वे मृग जिन्हें ऋषिपत्नियाँ स्नेहवश नीवार नामक वन्य-धान का कुछ भाग प्रतिदिन प्रदान करती थीं और इसी कारण वे इसे ग्रहण करने के अभ्यासी हो गए थे। इसे मुन्यन्न अथवा तिन्नी

भी कहते हैं। इस नीवार का वर्णन आश्रम-सम्बन्ध से अभिज्ञानशाकुन्तलम् में भी महाकवि कालिदास ने भरपूर किया है।

विशेष ऋषिपत्नियाँ सायंकाल के समय प्रतिदिन मृगों को अपने हाथों से नीवार नामक धान खिलाया करती थी। मृगों को प्रतिदिन नीवार खाने का अभ्यास हो गया था और वे नीवार का अपना भाग लेने के लिए प्रतिदिन सायंकाल के समय कुटिया के द्वार पर आकर खड़े हो जाते थे। अतएव जब दिलीप राजा सायंकाल के समय आश्रम में पहुँचे तो वहां कुटियों के द्वार पर मृगों के झुण्ड नीवार-प्राप्ति की आशा में खड़े हुए मिले।

ऋषिपत्नीनामपत्यैरिव मृगैः मृगों के द्वारा, जो कि ऋषियों की पत्नियों के बच्चों के समान थे। महाकवि कालिदास महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में रहने वाले ऋषि एवं उनकी पत्नियों के उस सौहार्द का चित्रण करते हैं जिसके कारण से वे लोग पशुपक्षियों से भी सहज बन्धु सा व्यवहार करते थे। इस भाव का चित्रण महाकवि ने अपने नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् में भी किया है, जहाँ शकुन्तला एवं उसकी सखियां मृगशावकों एवं वृक्षों से भी आत्मीय सम्बन्ध रखती हैं।